REVIEW OF RESEARCH
ISSN: 2249-894X
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF)
VOLUME - 13 | ISSUE - 10 | JULY - 2024

रीवा पठार की जलवायु एवं मिट्टियों का भौगोलिक अध्ययन

विकाश दुवे
शोधार्थी भूगोल
शासकीय संजय गाँधी स्मृति स्नातकोत्तर महाविद्यालय, सीधी (म.प्र.)

डॉ. के.एस. नेताम
प्राध्यापक एवं विभागाध्यक्ष भूगोल
शासकीय संजय गाँधी स्मृति स्नातकोत्तर महाविद्यालय, सीधी (म.प्र.)

सारांश –

रीवा पठार, भारतीय उपमहाद्वीप के मध्य–उत्तरी भाग में स्थित है और इसका भौगोलिक अध्ययन करने पर ये तत्व सामने आते हैं। रीवा पठार का अधिकांश क्षेत्र उमसरा जलवायु से प्रभावित होता है। यहाँ गर्म और उमसरा मौसम पाया जाता है जिसमें गर्मियों में उच्च तापमान और वर्षा की कमी होती है। कुछ भाग रीवा पठार का मृदा जलवायु भी होता है जहाँ वर्षा अधिक होती है और तापमान में थोड़ी कमी रहती है। रीवा पठार की मिट्टियाँ विविधतापूर्ण हैं। यहाँ लाल, पीली और काली मिट्टियाँ पायी जाती हैं। मृदा गहरी और संगमर्मरी होती है, जबकि कुछ स्थलों पर बालू मिट्टी भी मिलती है। इन मिट्टियों की विशेषता क्षेत्र के जलवायु कृषि उत्पादन पर निर्भर करती है।

मुख्य शब्द – रीवा पठार, जलवायु एवं मिट्टियाँ।

प्रस्तावना –

रीवा की धरातलीय संरचना में विभिन्नता दिखाई देती है। पर्वत, पठार, मैदान, घाटियाँ, विषम धरातल एवं अपवाह तंत्र देखने को मिलता है। धरातलीय बनावट की दृष्टि से जिले का पूर्वी व दक्षिणी भाग सबसे ऊँचा, पश्चिमी कम ऊँचा तथा उत्तरी भाग उत्तर प्रदेश की ओर झुका (ढालनुमा) हुआ है। रीवा जिले के दक्षिण में कैमोर पर्वत तथा मध्य में विन्ध्य पर्वत है। ये दोनों पहाड़ विन्ध्यांचल पर्वत की श्रृंखलाएँ हैं जो पूर्व से पश्चिम कतार के अलावा छोटी–छोटी पहाड़ियों में बिखरा हुआ है। किसी क्षेत्र की धरातलीय संरचना तथा अपवाह तंत्र मानवीय वातावरण को निश्चित रूप से प्रभावित करता है।

रीवा जिला मध्यप्रदेश के पूर्वोत्तर कोने में $24^0$18′ 30″ से $25^0$11′15″ उत्तरी अक्षांश तथा $81^0$13′15″ से $82^0$18′45″ पूर्वी देशान्तर के बीच स्थित है। जिले की अधिकतम लम्बाई पूर्व से पश्चिम 125 किलोमीटर तथा चौड़ाई उत्तर से दक्षिण 96 किलोमीटर है। रीवा जिले का सम्पूर्ण क्षेत्रफल 6287.5 वर्ग किलोमीटर है। जिले के पश्चिमोत्तर में बांदा उत्तर में इलाहाबाद तथा पूर्व में उत्तर प्रदेश का ही मिर्जापुर जिले की सीमा लगती है। जबकि दक्षिण में सीधी जिला व पश्चिम में मध्यप्रदेश का सतना जिला की सीमा मिलती है। भौगोलिक प्रदेश की दृष्टिकोण से यह जिला विन्ध्य पठारी प्रदेश अन्तर्गत रीवा, पन्ना पठार के नाम से विख्यात है। किन्तु जिले का

उत्तर भाग विन्ध्यन स्कार्प लैण्ड जो विन्ध्यन प्रपाती कगार के रूप में सम्मिलित है। रीवा जिला आदिकाल से ही क्षेत्रीय नेतृत्व करता रहा है और वर्तमान में भी यह संभागीय मुख्यालय है। रीवा जिला 2 अप्रैल 1948 को अस्तित्व में आया। पूर्व में रीवा रियासत की राजधानी के रूप में भी जाना जाता था। आजादी के साथ ही प्रशासनिक ईकाईयों के अन्तर्गत यह क्षेत्र सेन्ट्रल एरिया के उत्तरी जिले के रूप में जाना जाता था। 4 अप्रैल 1948 को रीवा रियासत तथा बुन्देलखण्ड की 34 रियासतों को मिलाकर नया प्रदेश 'विन्ध्य प्रदेश' अस्तित्व में आया। 1 नवम्बर 1956 को रीवा को सम्भागीय दर्जा प्राप्त हुआ और वर्तमान में भी नवगठित सिंगरौली जिला सहित रीवा, सीधी, सिंगरौली तथा सतना 4 जिलों का सम्भागीय मुख्यालय रीवा है।

विश्लेषण –

जलवायु – मौसम के दीर्घकालिक अवस्था को जलवायु कहा जाता है। सम्पूर्ण रीवा पठार की जलवायु उष्ण कटिबन्धीय है क्योंकि रीवा जिला कर्क रेखा के निकट स्थित है। यहाँ की जलवायु पूर्णतः मानसूनी है। रीवा पठार में ऋतुवार ग्रीष्म, वर्षा और शीत ऋतुएँ हैं। 12 माह के तीन प्रमुख ऋतुओं में विभक्त किया गया है जो निम्नलिखित है –

1. 15 जून से 15 अक्टूबर के मध्य, वर्षा ऋतु।
2. 16 अक्टूबर से 15 फरवरी के मध्य, शीत ऋतु।
3. 16 फरवरी से 14 जून के मध्य, ग्रीष्म ऋतु।

इस प्रकार रीवा पठार में वर्षा ऋतु में काफी वर्षा अनियमित और अनिश्चित होती है। शीत ऋतु में काफी ठण्डी पड़ती है और ग्रीष्म ऋतु में भीषण गर्मी 'लू' चलती है। उष्णकटिबन्धीय जलवायु के कारण ही यहाँ उष्णकटिबन्धीय पतझड़ वन पाये जाते हैं, जो मौसमी दशाओं के अनुकूल अपने आप को व्यवस्थित कर लेते हैं। सामान्य रूप से जलवायु शुष्क है।

तापमान – रीवा पठार में तापमान भी समय के साथ बदलता रहता है। 15 नवम्बर से 15 जनवरी के मध्य रीवा पठार का औसत तापमान 08^0 के आस–पास हो जाता है। ग्रीष्म ऋतु में 45^0 औसत तापमान रहता है। वर्षा ऋतु में आर्द्रता के कारण तापमान में कमी प्रारम्भ हो जाती है। इस तरह जिले का न्यूनतम तापमान 1^0 तथा अधिकतम 49^0 तक रहता है।

वर्षा – सम्पूर्ण रीवा पठार में वर्षा दक्षिणी–पश्चिमी मानसूनी हवाओं के द्वारा होती है। कभी–कभी पूर्वी हवाओं से भी होती है। रीवा जिले में अधिकतम 1195.3 मिलीमीटर तथा न्यूनतम 615 मिलीमीटर वार्षिक वर्षा होती है। रीवा पठार में वर्षा का प्रमुख समय जुलाई और अगस्त माह का है। प्रदूषण के कारण अब वर्षा में काफी अनियमितता पायी गयी है। कभी आवश्यकता से अधिक, तो कभी आवश्यकता से काफी कम, कभी–कभी पूरे वर्ष भर, तो किसी वर्ष समय से पूर्व ही समाप्त हो जाती है।

मिट्टियाँ – सभी क्षेत्रों में मिट्टियों का वितरण समान रूप से नहीं है। मध्यप्रदेश शासन के सर्वेक्षण विभाग, मध्यप्रदेश के भू–गर्भ शास्त्र और खनिज विभाग द्वारा प्रत्येक जिले के भूगर्भ शस्त्र एवं खनिज के वितरण की जो जानकारी दी गयी है, उसके अनुसार रीवा पठार में दो प्रकार की मिट्टी (1) काली मिट्टी (2) लाल मिट्टी है। जिले में कहीं–कहीं सफेद मिट्टी (ऊसर) भी पायी जाती है। पठारी पहाड़ी क्षेत्रों में लाल मिट्टी, मैदानी क्षेत्रों में काली दोमट मिट्टी, तथा तराई में काप मिट्टी व रेतीली मिट्टी भी पायी जाती है।

सम्पूर्ण जीव जन्तुओं के जीवन का आधार मिट्टी है। जीवन के जीविकोपार्जन जैसी क्रियाओं की पूर्ति मिट्टियों द्वारा ही होती है। यह मिट्टी मौसम व जलवायु परिवर्तन के साथ बदलती रहती है। जिले की मिट्टी को निम्न भागों में विभक्त किया गया है –

1. काली मिट्टी – काली मिट्टी रीवा पठार के पठारी एवं यदा–कदा मैदानी क्षेत्रों में पायी जाती है। बेसाल्ट व मैग्नेटाइट के अन्तिम विभाजन के कारण इस मिट्टी का रंग काला रहता है। इस मिट्टी वाले क्षेत्रों में जमीनी दर्रे देखने को मिलते हैं। सूखी मिट्टी में पानी पड़ने पर साबुन की तरह चिकनी हो जाती है। इसमें जल ग्रहण की क्षमता अधिक होती है। जिले में काली मिट्टी की प्रमुख फसल धान, उड़द, मूँग, सोयाबीन और अरहर (खरीफ) फसल है, जबकि गेहूँ, मसूर, चना, मटर आदि (रबी) है। रेंगुर मिट्टी (काली मिट्टी) के क्षेत्र को बहुफसली क्षेत्र के रूप में जाना जाता है। इस प्रकार की मिट्टी का वितरण तहसील सेमरिया, सिरमौर हुजूर, मनगवाँ आदि में अधिक पाया गया है।

2. लाल मिट्टी – यह मिट्टी रीवा पठार के कैमूर व विन्ध्यन श्रेणी के आस–पास तल छट में पायी जाती है। यह मिट्टी पहाड़ी और पठारी दोनों भागों में पायी जाती है। इस मिट्टी की प्रमुख विशेषताएँ–रंग लाल होता है। कम उपजाऊ होती है। बहुफसली होती है (पर्याप्त पानी उपलब्धता पर)। यह मिट्टी बालुई होती है। नमी रोकने की क्षमता कम होती है। सभी फसलें उगाई जाती हैं। इस प्रकार की मिट्टी का वितरण तहसील नईगढ़ी एवं मऊगंज में अधिकांश पाया गया है।

3.काली व लाल मिट्टी – इस मिट्टी का निर्माण काली व लाल मिट्टी के मिश्रण से हुआ है। ऐसी मिट्टी वाले भाग बहुफसली क्षेत्र कहे जाते हैं। क्योंकि पानी के उपलब्धता के आधार पर इन क्षेत्रों में सभी प्रकार की फसलें उगायी जा सकती हैं। धान, गेहूँ, चना, मटर, अलसी, मसूर, मूंगफली, ज्वार व तुअर आदि। साथ पानी उपलब्ध होने पर सब्जियाँ भी उगाई जाती हैं। यह क्षेत्र पहाड़ी क्षेत्रों के समीपस्थ होता है, जो कि रीवा में उत्तरी–पूर्वी और दक्षिणी ओर है। इस प्रकार की मिट्टी त्योंथर, जवा, सिरमौर, रायपुर कर्चुलियान तहसील में पायी गई है।

4.रेतीली व कॉप मिट्टी – नदियों द्वारा लायी गयी मिट्टी है। इस मिट्टी में खरीफ और रबी सभी फसलें उगायी जाती हैं। साथ ही सिंचित क्षेत्रों में गर्मी की फसलें ली जाती हैं। यह मिट्टी जिले में नदियों की घाटियों में पायी जाती हैं। यह बहुत उपजाऊ होती है। वितरण की दृष्टिकोण से यह मिट्टी रीवा पठार के जवा विकासखण्ड एवं त्योंथर विकास खण्ड की टोन्स नदी एवं उसकी सहायक नदियों के तटवर्ती क्षेत्र के ग्रामों में पायी गई है। इस प्रकार की मिट्टी विशेषकर जवा, त्योंथर तहसील में पायी गई है।

5.चूनामय मिट्टी – जिले में चूनामय मिट्टी का विस्तार दक्षिण–पूर्व से लेकर सुदूर दक्षियी भाग में पाया जाता है। यह मिट्टी मध्यम उपजाऊ वाली होती है। इस क्षेत्र में जनसंख्या का घनत्व मध्यम पाया जाता है। चूनामय मिट्टी का वितरण पहाड़ी भागों में हनुमना, खटखरी, गुढ़ आदि राजस्व निरीक्षक मण्डलों में पाया जाता है। इन राजस्व निरीक्षक मण्डलों में जनसंख्या वृद्धि दर मध्यम तथा जनसंख्या घनत्व 175 से 225 व्यक्ति प्रति वर्ग कि. मी. पाया जाता है। इस प्रकार की मिट्टी की प्रमुख उपजें ज्वार, बाजरा, चना, मसूर, अलसी, जौ, कुटकी, तुअर, साँवा एवं मक्का आदि हैं। इस प्रकार की मिट्टी वर्षा जल एवं वाही जल के प्रवाह से अपरदन द्रुतगति से होता है। भू–क्षरण की बारम्बारता अधिक तीव्र पाई गई है। इस प्रकार की मिट्टी का वितरण तहसील हनुमना, गुढ़ आदि में पाया जाता है।

मृदा अपरदन – मानसूनी जलवायु के क्षेत्रों में मृदा अपरदन एवं भूमि का अपक्षय दो गंभीर समस्याएँ हैं, जिनका समुचित ज्ञान भूमि उपयोग एवं भावी योजनाओं की दृष्टि से ज्ञान आवश्यक है। रीवा पठार जैसी भूमि अपरदन की कोई उग्र समस्या नहीं है, फिर भी इस पठारी क्षेत्र की नदियाँ जैसी ही पहाड़ी एवं उच्च क्षेत्रों में प्रवेश करती हैं, उनमें अपवाह क्षेत्र में अपरदन करती है, वर्ष 2015–16 के अध्ययन प्रतिवेदन के अनुसार मध्य प्रदेश के रीवा पठार में टोन्स नदी एवं उसकी सहायक नदियों द्वारा 45.43 हजार मीट्रिक टन मृदा का अपदरन प्रति वर्ष होता है। नदियाँ अपने अपवाह क्षेत्र में तहसील/विकासखण्ड जवा एवं तहसील/विकासखण्ड त्योंथर ज्ञात है। यह क्षेत्र रीवा पठार के कुल क्षेत्रफल का लगभग 20 प्रतिशत है।

जवा एवं त्योंथर तहसील में टोन्स एवं महाना नदी में पहाड़ी भागों विशेषकर विंध्यन कगारी प्रदेश से अनेक बरसाती नाले जैसे उखमय, डबडिया, कड़वार, बरहुला नाला, रामबाग नाला, सुकाड़, आदि के द्वारा भू–क्षण की बारम्बारता काफी तीव्र पाई गई है। इसके अतिरिक्त जवा एवं त्योंथर तहसील में टोन्स नदी, महाना नदी, बेलन नदी का कछारी मैदानी क्षेत्र विस्तृत है जहाँ जनसंख्या का घनत्व उच्च पाया गया है। यद्यपि जिले में विन्ध्यन कगारी प्रदेश, पठारी क्षेत्र में प्रपाती कगार से उतर कर आने वाली टोन्स, बीहर, महाना, ओड्डा आदि नदियों में द्रुत गति जल प्रवाह ज्ञातव्य है। जल का वेग अधिक होने से भू–क्षरण की गति तीव्र पायी गई है। अतः इन नदियों द्वारा कृषि योग्य खेतों की उपजाऊ मिट्टी प्रवाहित होकर अन्यत्र स्थानान्तरित हो जाती है।

निष्कर्ष:

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि रीवा पठार की जलवायु उमसरा और मृदा जलवायु के बीच संतुलित है। उमसरा जलवायु में गर्मी के मौसम में ऊँचा तापमान और कम वर्षा होती है, जबकि मृदा जलवायु में वर्षा अधिक होती है और तापमान में थोड़ी कमी रहती है। रीवा पठार की मिट्टियाँ विविधतापूर्ण हैं। यहाँ लाल, पीली और काली मिट्टियाँ पायी जाती हैं, जो कृषि और उपज के लिए महत्वपूर्ण हैं। मिट्टी की विशेषता क्षेत्र के जलवायु और कृषि उत्पादन पर निर्भर करती है। रीवा पठार के प्रमुख नदी सोन, तावेल, और महानदी हैं। इन

नदियों का प्रवाह वर्षा की मात्रा और भूमि के प्रकार पर निर्भर करता है। ये नदियाँ कृषि, पानी की आपूर्ति, और प्राकृतिक संसाधनों के लिए महत्वपूर्ण होती हैं। रीवा पठार में सुंदर और विविध वन्य जीवन पाया जाता है। यहाँ बाघ, चीता, हाथी, नीलगाय, भालू और अन्य प्राकृतिक जीवों की अच्छी संख्या में होती है।

संदर्भ –

1. पंडा, बी.पी. (1991) – जनसंख्या भूगोल, द्वितीय संस्करण, मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, रवीन्द्रनाथ ठाकुर मार्ग, भोपाल, पृष्ठ 78.
2. सिंह, जीवन (1931) – रीवा राज्य दर्पण, प्रयाग प्रकाशन, इलाहाबाद, पृष्ठ 38.
3. सी.ई., लुआई (1908) – इम्पीरियल गजेटियर ऑफ इण्डिया, सोलहवां संस्करण, कलकत्ता, पृष्ठ 281.
4. जिला सांख्यकीय पुस्तिका, वर्ष 2013–14, जिला सांख्यकीय एवं योजना कार्यालय, रीवा (म.प्र.)
5. धरातल पत्रक (स्थलाकृतिक मानचित्र), 63 जी.एच., सर्वे ऑफ इण्डिया।
6. त्रिपाठी, गुलाब कली (1994) – रीवा पठार का ग्रामीण अधिवास, भूगोल, अप्रकाशित शोध प्रबन्ध, अवधेश प्रताप सिंह विश्वविद्यालय, रीवा (म.प्र.), पृष्ठ 167.
7. शर्मा, श्री कमल (1987) – औद्योगिक भूगोल, प्रथम संस्करण, मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, भोपाल (म.प्र.), पृष्ठ 53.